Roll No. .....

Total No. of Pages : 8

Total No. of Questions : 7

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्ड

विषय कोड : 817

योगविज्ञानम् (कैवल्यपादः)

पञ्चम् प्रश्नपत्र

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक : 100**

नोट :—**सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

सभी प्रश्नों के अंक सामने दिये गये हैं।

निर्देश :— **सर्वेषां** प्रश्नानाम् उत्तराणि देयानि।

सर्वेषां प्रश्नानां अंकाः प्रश्नस्य सम्मुखं सन्ति।

1. उचित विकल्प का चयन कीजिए : प्रत्येक 2

उचित विकल्पस्य चयनं कुरुत —

(*i*) योगसूत्र के रचयिता हैं :

(अ) मुनि घेरण्ड (ब) मुनि वशिष्ठ

(स) महर्षि पतञ्जलि (द) स्वामी स्वात्माराम

योगसूत्रस्य रचयिता अस्ति —

(अ) मुनि घेरण्डः (ब) मुनि वशिष्ठः

(स) महर्षि पतञ्जलिः (द) स्वामी स्वात्मारामः

(*ii*) योगसूत्र में कैवल्यपाद है :

(अ) प्रथम पाद (ब) द्वितीय पाद

(स) तृतीय पाद (द) चतुर्थ पाद

योगसूत्रे कैवल्यपादः अस्ति –

(अ) प्रथमपादः (ब) द्वितीयपादः

(स) तृतीयपादः (द) चतुर्थपादः

(*iii*) धर्ममेघ समाधि का वर्णन किस पाद में है ?

(अ) साधन पाद (ब) कैवल्य पाद

(स) समाधि पाद (द) विभूति पाद

धर्ममेघसमाधेः वर्णनं कस्मिन् पादे अस्ति ?

(अ) साधनपादः (ब) कैवल्यपादः

(स) समाधिपादः (द) विभूतिपादः

(*iv*) योगसूत्र के अनुसार योग के अंग हैं :

(अ) 8 (ब) 10

(स) 5 (द) 4

योगसूत्रानुसारेण योगस्य अंगानि वर्तन्ते –

(अ) अष्ट (ब) दश

(स) पञ्च (द) चत्वारि

(*v*) कैवल्यपाद में कितने सूत्र हैं ?

(अ) 55 (ब) 51

(स) 34 (द) 50

कैवल्यपादे कीयन्ति सूत्राणि सन्ति ?

(अ) पञ्चपञ्चाशत् (ब) एकपञ्चाशत्

(स) चतुरत्रिंशत् (द) पञ्चाशत्

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए : प्रत्येक 2

रिक्तस्थानानां पूर्तिं कुरुत –

(*i*) जन्मौषधिमन्त्रतपः.....सिद्धयः सन्ति।

(*ii*) तासामनादित्वं चाशिषो.....।

(*iii*) ते व्यक्तसूक्ष्मा.....।

(*iv*) प्रसंख्यानेऽव्यकुसीदस्य सर्वथा.....समाधि।

(*v*) ततः.....।

3. सत्य/असत्य बताइये : प्रत्येक 2

(*i*) योगसूत्र में कुल 195 सूत्र हैं।

(*ii*) धर्ममेघ समाधि का वर्णन समाधि पाद में है।

(*iii*) योगी के कर्म अशुक्ल और कृष्ण होते हैं।

(*iv*) चित्त का उपादान कारण स्मिता है।

(*v*) विवेकज्ञान प्राप्त होने पर संस्कारों का सर्वथा नाश हो जाता है।

सत्यमसत्य चुनुत, सत्यं पुरतः ''आम'' चिन्ह (✓) असत्यं पुरतः ''न'' (×) चिन्हांकनं कुरुत –

(*i*) योगसूत्रे आहत्य पञ्चनवत्यधिकैकशतम् सूत्राणि सन्ति।

(*ii*) धर्ममेघसमाधेः वर्णनं समाधिपादे अस्ति।

(*iii*) योग्यः कर्माणि अशुक्ला कृष्णश्च भवन्ति।

(*iv*) चितस्य उपादानकारणं स्मिता भवति।

(*v*) विवेकज्ञानं प्राप्ते सति संस्काराणां सर्वथा नष्टाः भवन्ति।

4. सही जोड़ी बनाइये : प्रत्येक 2

	अ		ब
(*i*)	कैवल्य का अर्थ	–	क्लेशकर्मों का सर्वथा नाश
(*ii*)	धर्ममेघ समाधि	–	जन्मजा
(*iii*)	जन्म से होने वाली सिद्धि	–	गुणात्मानः
(*iv*)	धर्मों का असली स्वरूप	–	राजयोग
(*v*)	योगसूत्र का सम्बन्ध	–	मोक्ष

शुद्धयुग्मं मेलयत –

	अ		ब
(*i*)	कैवल्यस्यार्थ	–	क्लेशकर्माणां सर्वथा विनाशा
(*ii*)	धर्ममेघसमाधिः	–	जन्मजा
(*iii*)	जन्मना भवन्ति सिद्धिः	–	गुणात्मानम्
(*iv*)	धर्माणां वास्तविकस्वरूपम्	–	राजयोगः
(*v*)	योगसूत्रस्य सम्बन्धेः	–	मोक्षः

5. **एक** शब्द में उत्तर दीजिए : प्रत्येक 2

(*i*) योग का अर्थ बताइये।

(*ii*) कैवल्य पाद के सूत्रों की संख्या बताइये।

(*iii*) धर्ममेघ समाधि का वर्णन किस सूत्र में किया गया है ?

(*iv*) **पाँच** प्रकार की सिद्धि के नाम लिखिए।

(*v*) द्रष्टा का अर्थ बताइये।

एकशब्देन उत्तरत–

(*i*) योगस्य अर्थं वर्णयत।

(*ii*) कैवल्यपादस्य सूत्राणां संख्यां लिखत।

(*iii*) धर्ममेघसमाधेः वर्णनं कस्य सूत्रे कृतमस्ति ?

(*iv*) पञ्चप्रकारकाः सिद्धिनां नामानि लिखत।

(*v*) ''द्रष्टा'' शब्दस्य अर्थं लिखत।

6. किन्हीं **चार** प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए : प्रत्येक 5

(*i*) जाति-अन्तर-परिणाम किसे कहते हैं ?

(*ii*) कैवल्यपाद की विशेषता का वर्णन कीजिए।

(*iii*) कर्माशय शून्य सिद्ध योगी के कर्मों का वर्णन कीजिए।

(*iv*) विवेक से आप क्या समझते हैं ?

(*v*) क्रय सूत्र की व्याख्या कीजिए।

केचन् **चतुर्णा** प्रश्नानां लघूत्तरं लिखत –

(*i*) जाति-अन्तर-परिणमं कं कथ्यते ?

(*ii*) कैवल्यपादस्य विशेषतायाः वर्णनं कुरुत।

(*iii*) कर्माशयशून्य सिद्धियोग्यः कर्माणां वर्णनं वर्णयत।

(*iv*) "विवेक" अनेन भवन्तः किं ज्ञायन्ते ?

(*v*) क्रयसूत्रस्य व्याख्यां कुरुत।

7. दीर्घ उत्तर दीजिये (कोई **दो**) : प्रत्येक 15

(*i*) कैवल्य के स्वरूप की चर्चा कीजिए।

(*ii*) धर्ममेघ समाधि किसे कहते हैं ? विस्तार से समझाइये।

(*iii*) पातंजलयोग सूत्र पर एक निबंध लिखिए।

अधोलिखित कयोः **द्वयोः** प्रश्नयोः विशदवर्णनं कुरुत –

(*i*) कैवल्यस्य स्वरूपस्य व्याख्यां कुरुत।

(*ii*) धर्ममेघसमाधिः काम् कथ्यते ? विशदवर्णनं कुरुत।

(*iii*) पातंजल योगसूत्रस्य उपरि एकः निबंधः लिखत।